IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

# राष्टीय शिक्षा नीति 2020 का स्वरुपः बहुविषयकता और समग्र शिक्षा

**डॉ. अंजु शर्मा**
सहायक आचार्य, एचओडी इतिहास
एसएस जैन सुबोध गर्ल्स पीजी कॉलेज, सांगानेर, जयपुर
**डॉ. नीलम**
सहायक आचार्य, इतिहास
वैदिक पी. जी. कॉलेज, वरुण पथ मानसरोवर, जयपुर

तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों में भारत के समग्र और बहु–विषयक सीखने की एक लंबी परंपरा है, जिसमें भारत के व्यापक साहित्य के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के विषयों को मिलाकर पढ़ाया जाता था। बाणभट्ट की कादम्बरी एक उचित उदाहरण है बहु विषयक शिक्षा सिद्धांत का जिसमें 64 कलाओं या कलाओं के ज्ञान के रूप में एक अच्छी शिक्षा का वर्णन किया है और इन 64 में से 'कलाएं केवल विषय नहीं थीं, जैसे गायन और चित्रकला, बल्कि 64 वैज्ञानिक' क्षेत्र, जैसे रसायन और गणित, व्यावसायिक विषय जैसे बढ़ईगीरी और कपड़े बनाने वाले क्षेत्र, पेशेवर क्षेत्र, जैसे चिकित्सा और इंजीनियरिंग, साथ ही संचार, चर्चा और वाद विवाद जैसे व्यवहारिक कौशल । गणित, विज्ञान, व्यावसायिक विषयों, व्यावसायिक विषयों और सॉफ्ट स्किल्स सहित रचनात्मक मानव प्रयासों की सभी शाखाओं को 'भारतीय कला' माना जाना चाहिए। 'कई कलाओं के ज्ञान' या आधुनिक समय में क्या कहा जाता है, की इस धारणा को अक्सर 'उदार कला' कहा जाता है (अर्थात, कलाओं की एक उदार धारणा) को भारतीय शिक्षा में वापस लाया जाना चाहिए, क्योंकि यह ठीक उसी प्रकार की शिक्षा है 21 वीं सदी के लिए आवश्यक होगा।

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) के साथ मानविकी और कला को एकीकृत करने वाली स्नातक शिक्षा में शैक्षिक दृष्टिकोण के आकलन ने लगातार सकारात्मक सीखने के परिणाम दिखाए हैं, जिसमें रचनात्मकता और नवाचार, महत्वपूर्ण सोच और उच्च–क्रम की सोच क्षमता, समस्या–सुलझाने की क्षमताएं शामिल हैं , टीम वर्क, संचार कौशल, खेतों में अधिक सीखने की क्षमता और क्षेत्रों में पाठ्यक्रम की महारत, सामाजिक जुड़ाव और नैतिक जागरूकता में वृद्धि, आदि के अलावा सामान्य जुड़ाव और सीखने का आनंद। समग्र और बहु–विषयक शिक्षा दृष्टिकोण के माध्यम से अनुसंधान में भी सुधार और वृद्धि हुई है।

एक समग्र और बहुआयामी शिक्षा मानव–बौद्धिक, सौंदर्य, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक सभी क्षमताओं को एकीकृत तरीके से विकसित करने का लक्ष्य रखेगी। इस तरह की शिक्षा अच्छी तरह से गोल व्यक्तियों को विकसित करने में मदद करेगी जो कला, मानविकी, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और व्यावसायिक, तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण 21 वीं सदी की क्षमता रखते हैंय सामाजिक जुड़ाव की एक नैतिकताय नरम कौशल, जैसे संचार, चर्चा और बहसय और एक चुने हुए क्षेत्र या क्षेत्रों में कठोर विशेषज्ञता। इस तरह की एक समग्र शिक्षा, पेशेवर, तकनीकी और व्यावसायिक विषयों सहित सभी स्नातक कार्यक्रमों के दृष्टिकोण में होगी।

भारत के अतीत में समग्र और बहु–विषयक शिक्षा को इतनी खूबसूरती से वर्णित किया गया है, वास्तव में भारत की शिक्षा के लिए 21 वीं सदी और चौथी औद्योगिक क्रांति में देश का नेतृत्व करने के लिए क्या आवश्यक है। यहां तक कि आईआईटी जैसे इंजीनियरिंग संस्थान, अधिक कला और मानविकी के साथ समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की ओर बढ़ेंगे। कला और मानविकी के छात्रों को अधिक विज्ञान सीखने का लक्ष्य होगा और सभी अधिक व्यावसायिक विषयों और सॉफ्ट कौशल को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

कल्पनाशील और लचीली पाठ्यक्रम संरचनाएं अध्ययन के लिए विषयों के रचनात्मक संयोजनों को सक्षम करेंगी, और कई प्रवेश और निकास बिंदुओं की पेशकश करेंगी, इस प्रकार, वर्तमान में प्रचलित कठोर सीमाओं को हटाकर जीवन भर सीखने की नई संभावनाएं पैदा करेंगी। बड़े–बड़े बहु–विषयक विश्वविद्यालयों में स्नातक–स्तर, मास्टर और डॉक्टरेट शिक्षा, कठोर अनुसंधान–आधारित विशेषज्ञता प्रदान करते हुए, अकादमिक, सरकार और उद्योग सहित, बहु–विषयक कार्यों के अवसर भी प्रदान करेंगे।

बड़े बहु–विषयक विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च–गुणवत्ता वाले समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की दिशा में कदम बढ़ाएंगे। पाठ्यक्रम और उपन्यास में लचीलापन और आकर्षक पाठ्यक्रम विकल्प किसी विषय या विषयों में कठोर विशेषज्ञता के अलावा, छात्रों के लिए प्रस्ताव पर होंगे। पाठ्यक्रम बढ़ाने में संस्थापित संकाय और संस्थागत स्वायत्तता द्वारा इसे प्रोत्साहित किया जाएगा तो निश्चित तौर पर शिक्षाशास्त्र में संचार, चर्चा, बहस, अनुसंधान और क्रॉस–डिसिप्लिनरी और अंतःविषय सोच के अवसर बढ़ेंगे।

भाषा, साहित्य, संगीत, दर्शन, कला, नृत्य, रंगमंच, शिक्षा, गणित, सांख्यिकी, शुद्ध और अनुप्रयुक्त विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, खेल, अनुवाद और व्याख्या, और इस तरह के अन्य विषयों में एक बहुआयामी, उत्तेजक भारतीय के लिए आवश्यक विभाग शिक्षा और पर्यावरण सभी में स्थापित और मजबूत किए जाएंगे। इन विषयों के लिए सभी स्नातक उपाधि कार्यक्रमों में क्रेडिट दिया जाएगा यदि वे ऐसे विभागों से या ओडीएल मोड के माध्यम से किए जाते हैं, जब उन्हें में कक्षा में पेश नहीं किया जाता है।

ऐसी समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की प्राप्ति के लिए, सभी के लचीले और नवीन पाठ्यक्रम में क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम और समुदाय सगाई और सेवा, पर्यावरण शिक्षा, और मूल्य–आधारित शिक्षा के क्षेत्र शामिल होंगे। पर्यावरण शिक्षा में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता, जैविक विविधता का संरक्षण, जैविक संसाधनों का प्रबंधन और जैव विविधता, वन और वन्यजीव संरक्षण, और सतत विकास और रहने जैसे क्षेत्र शामिल होंगे। मूल्य आधारित शिक्षा में मानवतावादी, नैतिक, संवैधानिक और सत्य (सत्य), धार्मिक आचरण (धर्म), शांति (शांति), प्रेम (मुख्य), अहिंसा (अहिंसा, वैज्ञानिक स्वभाव, नागरिकता) के सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का विकास शामिल होगा। मूल्य, और जीवन–कौशल भीय सेवा ६ सेवा में सबक और सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों में भागीदारी को समग्र शिक्षा का एक अभिन्न अंग माना जाएगा। जैसे–जैसे दुनिया बढ़ती जा रही है, वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जीसीईडी), समकालीन वैश्विक चुनौतियों की प्रतिक्रिया, शिक्षार्थियों को वैश्विक मुद्दों को समझने और समझने और अधिक शांतिपूर्ण, सहिष्णु, समावेशी, सुरक्षित के सक्रिय प्रवर्तक बनने के लिए प्रदान किया जाएगा। अंत में, एक समग्र शिक्षा के हिस्से के रूप में, सभी में छात्रों को स्थानीय उद्योग, व्यवसाय, कलाकार, शिल्प व्यक्ति आदि के साथ इंटर्नशिप के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे, साथ ही अपने स्वयं के या अन्य संकाय और शोधकर्ताओं के साथ अनुसंधान इंटर्नशिप प्रदान की जाएगी। अनुसंधान संस्थान, ताकि छात्र सक्रिय रूप से अपने सीखने के व्यावहारिक पक्ष के साथ जुड़ सकें और एक उप–उत्पाद के रूप में, अपनी रोजगार क्षमता में और सुधार कर सकें।

### व्यावसायिक कोर्स

नवीन शिक्षा नीति के तहत डिग्री कार्यक्रमों की संरचना और लंबाई को तदनुसार समायोजित किया जाएगा। स्नातक की डिग्री या तो 3 या 4 साल की अवधि की होगी, इस अवधि के भीतर कई निकास विकल्प के साथ, उपयुक्त प्रमाणपत्र के साथ, उदाहरण के लिए, व्यावसायिक या व्यावसायिक क्षेत्रों सहित एक अनुशासन या क्षेत्र में 1 वर्ष पूरा करने के बाद एक प्रमाण पत्र, या 2 के बाद एक डिप्लोमा अध्ययन के वर्षों, या एक 3 साल के कार्यक्रम के बाद स्नातक की डिग्री। 4–वर्षीय बहु–विषयक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

स्नातक कार्यक्रम, हालांकि, पसंदीदा विकल्प होगा क्योंकि यह छात्र की पसंद के अनुसार चुने हुए प्रमुख और नाबालिगों पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की पूरी श्रृंखला का अनुभव करने का अवसर देता है। एक अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) स्थापित किया जाएगा जो विभिन्न मान्यता प्राप्त अर्जित अकादमिक क्रेडिट को डिजिटल रूप से संग्रहीत करेगा ताकि इससे प्राप्त डिग्री को अर्जित क्रेडिट में ध्यान में रखते हुए सम्मानित किया जा सके। 4–वर्ष का कार्यक्रम अनुसंधान के साथ कुछ हद तक उंल हो सकता है 'यदि छात्र के द्वारा निर्दिष्ट अध्ययन के अपने प्रमुख क्षेत्र (ओं) में एक कठोर अनुसंधान परियोजना को पूरा करता है।

समग्र और बहु–विषयक शिक्षा के लिए आदर्श सार्वजनिक विश्वविद्यालय के साथ, जिन्हें (बहु–विषयक शिक्षा और अनुसंधान विश्वविद्यालय) कहा जाता है, की स्थापना की जाएगी और गुणवत्ता शिक्षा के उच्चतम वैश्विक मानकों को प्राप्त करने का लक्ष्य रखेगा। वे भारत भर में बहु–विषयक शिक्षा के उच्चतम मानकों को निर्धारित करने में भी मदद करेंगे।

युवाओ के लिए स्वरोजगार स्टार्ट–अप इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित करके अनुसंधान और नवाचार पर ध्यान केंद्रित करेगाय प्रौद्योगिकी विकास केंद्रय अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों में केंद्रय अधिक से अधिक उद्योग–शैक्षणिक संपर्कय और मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान सहित अंतःविषय अनुसंधान। महामारी और महामारी के परिदृश्य को देखते हुए, यह महत्वपूर्ण है कि संक्रामक रोगों, महामारी विज्ञान, वायरोलॉजी, डायग्नोस्टिक्स, इंस्ट्रूमेंटेशन, वैक्सीनोलॉजी और अन्य प्रासंगिक क्षेत्रों में अनुसंधान करने का बीड़ा उठाता है। छात्र समुदायों के बीच नवाचार को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट हाथ पकड़े तंत्र और प्रतियोगिताओं का विकास करेगा। अनुसंधान प्रयोगशालाओं और अन्य अनुसंधान संगठनों में इस तरह के एक जीवंत अनुसंधान और नवाचार संस्कृति को सक्षम करने और समर्थन करने में मदद करने के लिए कार्य करेगा। तकनीकी सुधार ने भारत में आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है। भारत के आर्थिक विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। अन्य विकसित देशों की तुलना में भारत में युवा जनशक्ति अधिक है। उचित शिक्षा के माध्यम से युवाओं को भविष्य के लिए तैयार करने और उन्हें कुशल व्यक्तित्व प्रदान कर आर्थिक विकास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है। जिससे प्रौद्योगिकी तो बढ़ेगी ही साथ ही युवाओं में उचित मानव मूल्यों को विकसित भी किया जा सकेगा। शिक्षा के आधुनिक युग में प्रत्येक संस्थान या विश्वविद्यालय अपनी शिक्षण पद्वतियों का उपयोग करके नई शिक्षण विधियों को अपना रहे है। प्राचीनकाल में भारतीय शिक्षा दुनिया की सबसे बड़ी और प्रसिद्व शिक्षा प्रणाली रही है। प्राचीन भारत में शिक्षा के क्षेत्र में तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी आदि 5 बड़े प्रसिद्व विश्वविद्यालय रहे। जिनके सिलेबस को इस तरह बनाया गया था कि अध्ययनरत छात्रों का सर्वांगीण विकास हो। मध्यकाल के दौरान 2 संस्थान मदरसा और मकतब मौजूद थे जो ज्यादातर छात्रों के धार्मिक शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करते थे, ताकि वे भविष्य में बड़े धार्मिक नेता बन सके। आधुनिक शिक्षा में आईआईटी और आईआईएम जैसे प्रसिद्व स्वायत्त संस्थान है जो दुनिया भर में प्रसिद्व है।

प्राचीन शिक्षा के दौरान विद्यार्थी अपने माता पिता से दूर रहते थे । उनकी शिक्षा में शारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि जैसे विषय शामिल होते थे। उन्हे इस तरह से आकार दिया जाता था कि वे किसी भी विपरी परिस्थिति का सामना पूरे मनोबल के साथ करते थे। मध्यकालीन शिक्षा भी प्राचीन शिक्षा पद्वति के पद चिन्हों पर चली। आधुनिक युग में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और भारतीय प्रबंधन संस्थान जेसे बड़े संस्थानों में छात्रों का जीवन स्तर, पाठ्यक्रम, सर्वांगीण विकास सब कुछ बदल गया है। छात्र का मुख्य उद्देश्य सिर्फ अपने लक्ष्य को प्राप्त करना और सफल होना रह गया है। केवल आईआईटी और आईआईएम और कुछ अन्य अन्य निजी और सहायता प्राप्त विष्वविद्यालयों जैसे बड़े संस्थानों ने सीखने के आधुनिक तरीको को अपनाया है। हर संस्थान में पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्वति और छात्रों के जीवन स्तर में अंतर होता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम उद्योग उन्मुख नहीं है और नये आने वाले रुझानों के अनुरुप भी नहीं है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

अधिकतर सैद्वांतिक है और व्यवहारिक रुप से लागू नहीं किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा 2020 में जारी की गई एक महत्वपूर्ण नीति है, जो भारतीय शिक्षा प्रणाली को अपडेट करने और मोनोटाइज करने का प्रयास है। इस नीति का मुख्य ध्यान बहुविषयकता और समग्र शिक्षा पर है, जिसमें निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ शामिल हैं।

बहुविषयक शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुविषयक शिक्षा को महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया है। इसका मकसद है छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन करने की सुविधा प्रदान करना ताकि वे अपने रूचि और क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकें।

समग्र शिक्षा इस नीति में समग्र शिक्षा को प्रमुखता दी गई है। समग्र शिक्षा का मकसद सभी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रत्येक आयाम को समाहित करना है, जिसमें भाषा, कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित, और अन्य विषय शामिल हैं।

संरचनात्मक परिवर्तनरू राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संरचनात्मक परिवर्तन का भी ध्यान रखा गया है। इसमें शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए एक अद्वितीय और संरचित पाठ्यक्रम, परीक्षण प्रणाली, और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों को प्रदान करने का प्रस्ताव है।

अनुसंधान और नवाचार इस नीति में शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार को बढावा देने का भी प्रस्ताव है। इसका मकसद शिक्षा के क्षेत्र में नए और विशेष उत्पादों का विकास करना है जो छात्रों की शिक्षा को और अधिक प्रभावी बना सकें।

इस तरह, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुविषयकता और समग्र शिक्षा को महत्वपूर्ण ध्यान में रखते हुए, भारतीय शिक्षा प्रणाली को मोडने और सुधारने का प्रयास करती है।

**इस पेपर का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्राचीन और मध्यकाल से क्या–क्या चीजे अपनाने की जरुरत है और साथ ही इससे जुड़े कुछ रुझान भी। पेपर को मुख्य रुप से प्राचीन और मध्यकाल में बांटते हुए आधुनिक शिक्षा प्रणाली तक जोड़ा गया है। जिसमें पाठ्यक्रम, सीखने की विधि, शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा की विशेषताएं, शैक्षिक संस्थान, उच्च शैक्षिक संस्थान, फायदे और नुकसान जैसे उपखंड शामिल है।**

राष्टीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को बहुआयामी बनाया गया है ताकि विषयों और वर्गो की संकीर्णता को समाप्त किया जाए। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाएं तो प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा प्रणाली कुछ इसी प्रकार की रही है। उदाहरण के तौर पर महाभारत हो या रामायण की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जिसमें गुरुदेव अपने शिष्यों को यज्ञ करना भी सिखाते थे तो वाण चलाना भी, शास्त्रार्थ भी करना सिखाते थे तो साहित्यिक रचनाएं करना भी। प्राचीन काल के इतिहास में ऐसे अनेको सम्राटों के नाम मिल जाएगे जिन्होंने भीषण युद्ध भी किए और वीणा भी बजाई तो कईयों ने तो सुन्दर चित्र भी बनाएं। समुन्द्रगुप्त इसका सबसे उचित उदाहरण हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरुप ही प्राचीन भारत में समग्र व्यक्तित्व के विकास की मिसाल तक्षशिला और नालन्दा विष्वविद्यालय के रुप में हम इतिहास में पढ़ते है। जहां बहुविषयक शिक्षा प्रणाली पर आधारित शिक्षा देशी और विदेशी शिष्य प्राप्त करने आते थे।

नई शिक्षा प्रणाली के माध्यम से हम कला, विज्ञान, वाणिज्य और मानविकी की सीमाओं से परे होकर यानि लीक से हटकर सोचने की क्षमता को विकसित कर सकेगें। हालांकि इससे विषय विशेषज्ञता का अभाव अवष्य हो सकता है। लेकिन तकनीकी कौशल और प्रभावी संचार के माध्यम से इस कमी को पूरा किया जा सकता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

**नई शिक्षा नीति वर्तमान परिप्रेक्ष्य क्यों आवश्यक–**

1. लीक से हटकर सोच पैदा करना।
2. आत्मनिर्भर भारत में युवाओं के लिए रोजगार की चुनौतियों को दूर करने में सहायक सिद्ध होगी।
3. मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान की जा सकेगी जिससे भविष्य में आदर्श व्यक्तित्वों जैसे विवेकानंद, दयानदं सरस्वती को पुर्नजीवित करने का स्वर्णिम मौका मिल सकेगा।
4. बदलते वैष्विक परिदृष्य में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवष्यकताओं की पूर्ति करने के लिए मौजूदा शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवष्यकता थी।
5. शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने, नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिये नई शिक्षा नीति की आवष्यकता थी।
6. भारतीय शिक्षण व्यवस्था की वैश्विक स्तर पर पहुंच सुनिश्चित करने के लिये शिक्षा के वैश्विक मानकों को अपनाने के लिये शिक्षा नीति में परिवर्तन की अति आवश्यकता थी।

**आइए अब एक नजर देखते हुए हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली की ओर–**

प्राचीन काल में शिक्षा की दो प्रणालियां विकसित हुई, वैदिक और बौद्व। वैदिक प्रणाली के दौरान भाषा का माध्यक संस्कृत था जबकि बौद्व प्रणाली में भाषा का माध्यम पाली थी। उस समय शिक्षा वेद, ब्राहम्ण, उपनिषद और धर्मसूत्र की होती थी। ऋग्वेद के बाद से हमारी प्राचीन शिक्षा छात्रों के न केवल बाहरी शरीर बल्कि आंतरिक शरीर का भी विकास करने के उद्देश्य से शुरु हुई। प्राचीन शिक्षा छात्रों का विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी कृतियों का सम्मान करने जैसी नैतिकता प्रदान करने पर केन्द्रित थी। शिक्षा अधिकतर आश्रमों, गुरुकुलों, मंदिरा, घरों में दी जाती थी। प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली में कुछ विशेषताएं एवं विशिष्टताएं थीं। जो अन्य देशों की किसी भी प्राचीन शिक्षा प्रणाली में नहीं पाई जाती थी। शिक्षा अधिकतर जंगलों में नीले आकाश के नीचे दी जाती थी। जिसमें विद्यार्थी का दिमाग तरोताजा और जीवंत रहता था। प्राचीन काल में लोग सादा जीवन जीते थे और अपना काम निष्ठापूर्वक मेहनत से करते थे।

**शिक्षा का उद्देश्य**

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा से सुसज्जित करना था। शिक्षा का ज्यादातर संस्कृति, चरित्र और व्यक्तित्व के संबर्धन, विकास और महान आदर्शो की खेती पर केन्द्रित थी। इसका उद्देश्य छात्रों के मानसिक, शारीरिक और बौद्विक व्यक्तित्व को प्राप्त करना था ताकि छात्रों को भविष्य के लिए तैयार किया जा सके और किसी भी स्थिति में जीवित रह सके।

**पाठ्यक्रम**

शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम एक आवश्यक भूमिका निभाता है। यह गतिशील था, स्थिर नहीं यह विभिन्न चरणों से बना था। एक अच्छे पाठ्यक्रम के निर्माण का मूल लक्ष्य छात्रों का शारीरिक और मानसिक विकास करना था। पाठ्यक्रम में चार वेद, छह वेदांग, उपनिषद, दर्शन, पुराण, तर्क शास्त्र शामिल हैं। छह वेदांग शिक्षा, छंद, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प थे जबकि दर्शन न्याय, वैशेषिक, योग, वेदांत, सांख्य, मीमांसा थे। उस समय बीजगणित, रेखागणित और व्याकरण को भी अधिक महत्व दिया जाता था। पाणिनि उस समय व्याकरण के क्षेत्र में प्रसिद्ध थे। बौद्ध प्रणाली के पाठ्यक्रम में पिटक, अभिधर्म और सूत्र शामिल हैं। इस चिकित्सा के अतिरिक्त वेदों को भी महत्व दिया गया। हिंदू शिक्षा बौद्ध शिक्षा का एक हिस्सा थी, हालाँकि बौद्ध

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

शिक्षा पर अधिक जोर दिया गया था। उस समय दोनों प्रणालियाँ साथ–साथ चल रही थीं। शिक्षा पूरी तरह से मौखिक और वाद–विवाद के माध्यम से होती थी और परीक्षाएँ हर साल आयोजित की जाती थीं। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली युद्ध, सेना, राजनीति, धर्म जैसे विषयों पर केंद्रित थी।

### पाठ्यक्रम सीखने के तरीके

उस समय शिक्षक अपने छात्रों पर विशेष ध्यान देते थे और उन्हें उनके ज्ञान और कौशल स्तर के अनुसार पढ़ाते थे। शिक्षण मूलतः मौखिक और वाद–विवाद के माध्यम से होता था और विभिन्न तरीके इस प्रकार थे:

- उस समय किताबें नहीं होती थीं, इसलिए छात्रों को कक्षा में पढ़ाई गई सभी चीजों को सीखने और याद रखने की आदत होती थी और शिक्षक भी उन्हें याद करने में मदद करते थे।
- छात्र अपने शिक्षकों द्वारा सिखाई गई अवधारणाओं को गहराई से समझते थे और इसे सीखने के लिए नए तरीकों की खोज करते थे।
- श्रवण, चिंतन और एकाग्र चिंतन सीखने के तरीके की खोज के कुछ नए तरीके थे।
- •शिक्षकों ने छात्रों को पढ़ाने के लिए कहानी कहने के तरीकों का इस्तेमाल किया।
- छात्र शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए विषयों के बारे में प्रश्न पूछते थे और इन विषयों पर चर्चा की जाती थी और फिर छात्रों को उत्तर दिया जाता था।
- उस समय की शिक्षा मुख्य रूप से कक्षा में पढ़ाए जाने वाले विषयों के व्यावहारिक ज्ञान पर केंद्रित थी।
- •लगातार अंतराल पर आयोजित सेमिनारों और वाद–विवादों से छात्रों को भरपूर ज्ञान मिला।

### शिक्षण संस्थानों

आश्रम या धर्मोपदेश अन्य शिक्षण केंद्र थे जहां देश के विभिन्न हिस्सों से छात्र आते थे और संतों और ऋषियों से सीखते थे। विद्यापीठ महान आचार्य श्री शंकर द्वारा श्रृंगेरी, कांची, द्वारका और पुरी आदि स्थानों में स्थापित आध्यात्मिक शिक्षा का स्थान था। अग्रहार गाँवों में ब्राह्मणों की एक संस्था थी जहाँ वे पढ़ाते थे। विहार बौद्धों द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थान थे जहाँ छात्रों को बौद्ध धर्म और दर्शन से संबंधित विषय पढ़ाए जाते थे।

### उच्च शिक्षण संस्थान

1. तक्षशिला या तक्षशिला : तक्षशिला प्राचीन काल में धर्म और बौद्ध धर्म की शिक्षा सहित शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था। यह उनकी उच्च शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था जिसमें प्राचीन धर्मग्रंथ, कानून, चिकित्सा, समाजशास्त्र, खगोल विज्ञान, सैन्य विज्ञान और 18 शिल्प आदि जैसे विषय शामिल थे। विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध विद्वान महान व्याकरणविद् पाणिनि थे, वह एक विशेषज्ञ थे व्याकरण के अपने विषय और अष्टाध्यायी पर अपना काम प्रकाशित किया, चाणक्य जो राज्य कला में कुशल हैं, दोनों ने यहीं अध्ययन किया। लंबी और कठिन यात्रा के बावजूद काशी, कोसल, मगध और विभिन्न देशों से छात्र विश्वविद्यालय में आते थे। तक्षशिला एक प्राचीन भारतीय शहर था जो वर्तमान में उत्तर–पश्चिमी पाकिस्तान में स्थित है, यह शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था और इसे 1980 में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा पुरातत्व स्थल और विश्व धरोहर घोषित किया गया था।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

2. नालन्दाः जब जुआन जांग नालन्दा आये तो इसे नाला कहा जाता था, जो कई विषयों की शिक्षा का केंद्र था। यहां पढ़ने के लिए देश और दुनिया के अलग–अलग हिस्सों से छात्र आते थे। वेद, ललित कला, चिकित्सा, गणित और खगोल विज्ञान सहित विभिन्न विषय पढ़ाए जाते थे। जुआन जांग स्वयं योगशास्त्र के विद्यार्थी बने। नालंदा जो वर्तमान में भारत के बिहार के राजगीर में स्थित है, को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल भी घोषित किया गया था। प्राचीन काल के अन्य प्रसिद्ध संस्थान वल्लभी, विक्रमशिला, उज्जैन और बनारस थे।

**लाभ**

- यहप्रणाली छात्रों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है।
- सैद्धान्तिक ज्ञान की अपेक्षा व्यवहारिक ज्ञान पर अधिक बल दिया गया।
- छात्र सिर्फ रैंक लाने में ही शामिल नहीं थे, बल्कि उनका मुख्य ध्यान ज्ञान पर था।

आधुनिक युग में उद्योग और तकनीक दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है। प्रत्येक उद्योग क्षेत्र ऐसे व्यक्ति की तलाश में है जो उनके उद्योग के लिए सबसे उपयुक्त हो। औद्योगिक क्षेत्रों की लगातार बढ़ती मांग के साथ, हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को भी उन्नत करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी केवल प्रथम आने की होड़ में ही शिक्षा ग्रहण करते हैं, व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त नहीं होता। उन पर काम और पढ़ाई का काफी दबाव और बोझ है, इस वजह से छात्र आत्महत्या कर रहे हैं. हमारी शिक्षा प्रणाली को व्यावहारिक ज्ञान के कार्यान्वयन, छात्र–शिक्षक संबंधों, उस युग में छात्रों के जीवन जीने के तरीके, शिक्षा के प्रति राजाओं के योगदान, छात्रों पर कोई जोर नहीं दिया जाता था और बहुत कुछ के बारे में प्राचीन और मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली से सीखने की जरूरत है। अधिक। उद्योगों और वाणिज्यिक क्षेत्रों का भविष्य बहुत कठिन और कठिन होगा, इसलिए हमारी सरकार को ऐसी शिक्षा प्रणाली प्रदान करनी होगी जो छात्रों में सर्वांगीण विकास लाएगी और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करेगी और उन्हें किसी भी गंभीर स्थिति में जीना भी सिखाएगी। दृ

**नवीन शिक्षा नीति 2020 के समक्ष चुनौतियां–**

नई शिक्षा नीति के कुछ मामूली प्रतिबंध हो सकते हैं जिन्हें निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता हैः

1. **कार्यान्वयन की चुनौतियाँः** नई शिक्षा नीति का व्यावसायिक कार्यान्वयन में स्थानीय स्तर पर कठिनाईयों का सामना कर सकता है। कुछ राज्यों और क्षेत्रों में इसे लागू करने के लिए उपयुक्त धन, संसाधन, और प्रशिक्षण की कमी हो सकती है।
2. **शिक्षकों की तैयारीः** नई शिक्षा नीति शिक्षकों के लिए नई व्यवस्थाओं, पाठ्यक्रमों, और शैक्षणिक तकनीकों का परिचय कराने का प्रस्ताव रखती है, लेकिन इसकी पूरी तैयारी और प्रशिक्षण के लिए संसाधन की कमी हो सकती है।
3. **भाषा के परिणामः** कुछ समुदायों में नई शिक्षा नीति के भाषा के परिणाम का विवाद हो सकता है, खासकर जहां अंग्रेजी को प्राथमिक शिक्षा की भाषा के रूप में अपनाने की बात की जा रही है। इसमें समाज में असमानता या विवाद उत्पन्न हो सकता है।
4. **विभाजन का खतराः** नई शिक्षा नीति की अंतरराष्ट्रीय मान्यता हो सकती है, लेकिन इसका कुछ हिस्सों को विशेष ध्यान देने या स्थानीय संभावनाओं के अनुसार आदर्शित करने की आवश्यकता हो सकती है। ऐसा करने पर शिक्षा का विभाजन हो सकता है और सामाजिक असमानता बढ़ सकती है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

5. **क्रियात्मकता का अभावः** नई शिक्षा नीति के अंतर्गत अन्योन्य संबंधों को बढ़ावा देने की बात की जाती है, लेकिन इसकी वास्तविकता में क्रियात्मकता की कमी हो सकती है।

इन प्रतिबंधों के बावजूद, समय के साथ और संदर्भों के आधार पर, नई शिक्षा नीति को समायोजित करने और लागू करने में सरकार और समुदायों के साथ साझेदारी करके इन प्रतिबंधों का सामना किया जा सकता है।

**नई शिक्षा नीति के समग्रता और बहुविषयकता के कई लाभ हो सकते हैंः**

1. **व्यक्तित्व का विकासः** समग्र और बहुविषयक शिक्षा के माध्यम से छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान और कौशलों का अध्ययन करने का मौका मिलता है, जो उनके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास करता है।
2. **कला और विज्ञान की संगतिः** बहुविषयकता के अनुसार, छात्रों को विज्ञान, तकनीकी, अभिव्यक्ति कला, सामाजिक विज्ञान, और अन्य क्षेत्रों की समझ को संगठित रूप से सीखने का मौका मिलता है।
3. **नए और नवाचारी सोचः** छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन से संबंधित नए और नवाचारी विचारों का संचार करने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी सोचने की क्षमता और रचनात्मकता बढ़ती है।
4. **कौशल विकासः** बहुविषयक शिक्षा के माध्यम से छात्रों को विभिन्न कौशलों का विकास करने का मौका मिलता है, जैसे कि समस्याओं को समाधान करने की क्षमता, संचार कौशल, और नवाचारिता।
5. **करियर विकल्पों में विविधताः** बहुविषयक शिक्षा के परिणामस्वरूप, छात्रों के पास अधिक विविध करियर विकल्प होते हैं, क्योंकि उनके पास अन्यायर्थिक, विज्ञान, शिल्प और सामाजिक क्षेत्रों में विभिन्न विकल्प होते हैं।
6. **समाज में सामर्थ्य का विकासः** समग्र शिक्षा के माध्यम से समाज में सामर्थ्य का विकास होता है, क्योंकि लोग विभिन्न दृष्टिकोण से जानकारी प्राप्त करते हैं और एक–दूसरे के साथ संवाद करने की क्षमता विकसित करते हैं।

इन सभी लाभों के साथ, समग्रता और बहुविषयकता शिक्षा नीति के माध्यम से छात्रों को एक व्यापक और समर्थक शिक्षा अनुभव प्रदान करते हैं, जो उनके शैक्षिक, पेशेवर, और सामाजिक विकास को समर्थ बनाता है।

नई शिक्षा नीति का अधिकांश ध्यान शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर होता है, जिसमें उच्च शिक्षा भी शामिल है। नई शिक्षा नीति के अनुसार, उच्च शिक्षा में कई परिवर्तन आने की संभावना है, जो निम्नलिखित प्रकार से उस पर प्रभाव डाल सकते हैंः

1. **इंटीग्रेटेड और इंटरडिस्किप्लिनरी कार्यक्रमः** नई शिक्षा नीति के तहत, इंटीग्रेटेड और इंटरडिस्किप्लिनरी कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में गहरा ज्ञान प्राप्त करने का मौका मिलेगा। यह उच्च शिक्षा में नए और नवाचारी पाठ्यक्रमों का विकास कर सकता है।
2. **शैक्षिक तकनीकों का उपयोगः** नई शिक्षा नीति के अनुसार, शैक्षिक तकनीकों का उपयोग शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए किया जाएगा। इससे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नए और अधिक इंटरैक्टिव पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण की प्रणालियों का विकास हो सकता है।
3. **स्वायत्तता और आत्मनिर्भरताः** नई शिक्षा नीति उच्च शिक्षा में स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके तहत, छात्रों को नई और विशिष्ट व्यावसायिक कौशल प्राप्त करने का मौका मिलेगा, जो उन्हें बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बनाए रखेगा।
4. **गुणवत्ता में सुधारः** नई शिक्षा नीति का मुख्य लक्ष्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है। यह उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के मानकों को बढ़ावा देने के लिए नए प्रणालियों, पाठ्यक्रमों, और परीक्षण प्रक्रियाओं का आयोजन कर सकता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

5. **राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में सुधारः** नई शिक्षा नीति के अनुसार, भारतीय उच्च शिक्षा को वैश्विक स्तर पर बेहतर बनाने का प्रयास किया जाएगा। यह छात्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार कर सकता है।

इन प्रभावों के साथ, नई शिक्षा नीति उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नए और उन्नत परिवर्तनों को प्रेरित कर सकती है जो नई शिक्षा नीति में कई ऐसे सिद्धांत हैं जो प्राचीन भारतीय शिक्षा परंपरा से प्रेरित हैं। इनमें से कुछ मुख्य तत्वों को निम्नलिखित रूप में संक्षेपित किया जा सकता हैः

1. **गुरु–शिष्य परंपराः** नई शिक्षा नीति में गुरु–शिष्य परंपरा को महत्व दिया गया है। छात्रों को उनके अध्यापकों के साथ गहरा संबंध बनाने और उनसे सीखने का मौका मिलता है। यह प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का एक प्रमुख तत्व था।
2. **वैदिक ज्ञानः** नई शिक्षा नीति में भारतीय संस्कृति और वैदिक ज्ञान को पुनः प्रामाणिकता प्राप्त कराने का प्रयास किया गया है। इसके तहत, वैदिक शिक्षा और ग्रंथों को सम्मान दिया जाता है।
3. **अध्ययन और अनुसंधानः** नई शिक्षा नीति में अध्ययन और अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में भी अध्ययन और अनुसंधान का महत्व था, जो नवीनतम ज्ञान के उत्पादन और संज्ञान को प्रोत्साहित करता था।
4. **संस्कृत भाषाः** नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा को महत्व दिया गया है। संस्कृत भाषा को पुनः जीवंत करने और उसके अध्ययन को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जा रहा है, जो प्राचीन भारतीय शिक्षा की एक महत्वपूर्ण भाग है।
5. **शिक्षा का उद्दीपनः** नई शिक्षा नीति में शिक्षा का उद्दीपन किया जाता है। छात्रों को नैतिक, मानविक, और सामाजिक मूल्यों को समझाने का प्रयास किया जाता है, जो प्राचीन भारतीय शिक्षा परंपरा का एक प्रमुख लक्ष्य था।

इन सभी मामूली सिद्धांतों के साथ, नई शिक्षा नीति प्राचीन भारतीय शिक्षा परंपरा से प्रेरित हो रही है और उसे समाधानात्मक दिशा में ले जाने का प्रयास कर रही है।

नई शिक्षा नीति को पुरानी शिक्षा नीति की तुलना में बेहतर माना जा सकता है क्योंकि इसमें कई उन्नतियाँ और सुधार हैं, जो निम्नलिखित कारणों से हो सकती हैंः

1. **समग्र और बहुविषयकताः** नई शिक्षा नीति में समग्र और बहुविषयकता को महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया है, जिससे छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में गहरा ज्ञान प्राप्त होता है और उनकी नैतिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत विकास को समर्थ बनाया जाता है।
2. **कौशल विकासः** नई शिक्षा नीति के अनुसार, कौशल विकास पर जोर दिया गया है, जो छात्रों को अधिक प्रैक्टिकल और उपयोगी कौशलों का अध्ययन करने का मौका देता है।
3. **समर्थक शिक्षा प्रणालीः** नई शिक्षा नीति में एक समर्थक शिक्षा प्रणाली का प्रस्ताव है, जो विद्यार्थियों को उनके रूचियों और क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करने का मकसद रखती है।
4. **तकनीकी प्रगतिः** नई शिक्षा नीति में तकनीकी प्रगति को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न शैक्षिक प्रक्रियाओं में तकनीक का उपयोग करने का प्रस्ताव है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।
5. **स्वायत्तताः** नई शिक्षा नीति में स्वायत्तता को महत्व दिया गया है, जिससे शिक्षा प्रणाली में नवाचारिता और सुधार हो सकता है।
6. **अधिक उद्दीपनः** नई शिक्षा नीति में अधिक उद्दीपन किया गया है, जो छात्रों को समाजिक, नैतिक, और मौलिक मूल्यों को समझाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

इन सभी कारणों से, नई शिक्षा नीति को पुरानी शिक्षा नीति की नई शिक्षा नीति से विशेषज्ञता पर कई प्रभाव हो सकते हैं:

1. **विशेषज्ञता की प्रोत्साहन:** नई शिक्षा नीति में विशेषज्ञता को महत्व दिया जाता है और छात्रों को उनके पसंदीदा क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने का मौका मिलता है। इससे छात्रों की रुचि और प्रतिभा के अनुसार उनका विकास होता है।
2. **पेशेवर विकास:** विशेषज्ञता छात्रों को उनके चयनित क्षेत्र में ऊपरी स्तर की ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में मदद कर सकती है, जिससे उनके पेशेवर विकास को बढ़ावा मिलता है।
3. **उच्च शिक्षा में अनुसंधान:** विशेषज्ञता के क्षेत्र में छात्रों के उच्च शिक्षा में अनुसंधान की प्रोत्साहना किया जा सकता है, जिससे नए और नवाचारी विचार उत्पन्न हो सकते हैं।
4. **करियर विकल्प:** विशेषज्ञता के क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने के बाद, छात्रों के पास विभिन्न करियर विकल्प हो सकते हैं जैसे कि अनुसंधान, उद्योग, शिक्षण, और सेवा क्षेत्र में।
5. **व्यावसायिक मूल्य:** विशेषज्ञता के क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने से छात्रों को व्यावसायिक मूल्य मिल सकता है, जो उन्हें आगे बढ़ने में मदद कर सकता है।

इन प्रभावों के साथ, विशेषज्ञता को नई शिक्षा नीति के तहत प्रोत्साहित करने से छात्रों को उचित दिशा और मार्गदर्शन मिल सकता है, जो उन्हें अपने पेशेवर और व्यक्तिगत लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद कर सकता है।

नई शिक्षा नीति का सीधा प्रभाव सरकारी नौकरियों पर होने की संभावना है, जो निम्नलिखित तरीकों से हो सकता है:

1. **विशेषज्ञता का महत्व:** नई शिक्षा नीति में विशेषज्ञता को महत्व दिया जा रहा है। छात्रों को उनके चयनित क्षेत्र में गहरा ज्ञान प्राप्त करने का मौका मिलता है। इससे सरकारी नौकरी के लिए आवेदन करने वालों के पास अधिक उपयोगी कौशल हो सकते हैं जो उन्हें प्रतिस्पर्धी बनाते हैं।
2. **विभिन्न कौशलों की मांग:** नई शिक्षा नीति उन विभिन्न कौशलों को प्रोत्साहित करती है जो आधुनिक समय की मांगों के अनुसार हैं, जैसे कि तकनीकी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, और कला। इससे सरकारी संगठनों को उन कौशलों की मांग के साथ सामर्थिक व्यक्तियों को चुनने का मौका मिलता है।
3. **उद्यमिता के प्रोत्साहन:** नई शिक्षा नीति उद्यमिता को प्रोत्साहित करती है और छात्रों को नए और नवाचारी विचारों को समझाने के लिए प्रेरित करती है। इससे सरकारी नौकरी के लिए आवेदन करने वालों को नवाचारी और समाधानात्मक सोचने की क्षमता होती है।
4. **क्रिएटिविटी और रचनात्मकता:** नई शिक्षा नीति के अनुसार, छात्रों को उत्प्रेरित करने के लिए रचनात्मकता और क्रिएटिविटी को प्रोत्साहित किया जाता है। इससे सरकारी नौकरी करने वाले व्यक्तियों को समस्याओं का समाधान करने के लिए नवाचारी तरीके मिल सकते हैं।
5. **अधिक व्यक्तिगतकृत अनुभव:** नई शिक्षा नीति के अनुसार, छात्रों को अधिक व्यक्तिगतकृत अनुभव प्रदान किया जाता है। इससे सरकारी नौकरियों के लिए आवेदन करने वाले व्यक्तियों को उनके स्वयं के विकास की प्रोत्साहना मिलती है, जो उन्हें प्रतिस्पर्धी बनाता है।

इन सभी प्रभावों के साथ, नई शिक्षा नीति के प्राथमिक माध्यम से सरकारी नौकरियों पर भी सकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

## नई शिक्षा नीति के लिए चुनौतियां–संदर्भ सूत्र ग्रंथ सूची


- नई शिक्षा नीति 2020
- प्राचीन भारत का इतिहास

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

- ए हिस्टी ऑफ एन्शिएंट इंडिया–रमा शंकर त्रिपाठी
- प्राचीन भारत का इतिहास–अनिता गोस्वामी
- ऋग्वेद

एनईपी 2020, भाग प्रथम स्कूलों में पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्रः सीखना समग्र, एकीकृत, आनंददायक और आकर्षक होना चाहिए

- एनईपी 2020, भाग प्रथम शिक्षक
- एनईपी 2020, भाग प्रथम समान और समावेशी शिक्षाः सभी के लिए सीखना
- एनईपी 2020, भाग प्रथम स्कूल परिसरों ६ समूहों के माध्यम से कुशल संसाधन और प्रभावी शासन
- एनईपी 2020, भाग प्रथम स्कूली शिक्षा के लिए मानक–सेटिंग और प्रत्यायन
- एनईपी 2020, भाग द्वितीय उच्च शिक्षा
- एनईपी 2020, भाग द्वितीय, उच्च शिक्षा, संस्थागत पुनर्गठन और समेकन
- एनईपी 2020, भाग द्वितीयउच्च शिक्षा, एक अधिक समग्र और बहुविषयक शिक्षा की ओर
- एनईपी 2020, भाग द्वितीय उच्च शिक्षा, इष्टतम शिक्षण वातावरण और छात्रों के लिए समर्थन
- एनईपी 2020, भाग द्वितीय उच्च शिक्षा, प्रेरित, ऊर्जावान और सक्षम संकाय
- एनईपी 2020, भाग द्वितीयउच्च शिक्षा, समानता और उच्च शिक्षा में समावेश
- एनईपी 2020, भाग द्वितीय उच्च शिक्षा, शिक्षक शिक्षा
- एनईपी 2020, भाग द्वितीय उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा की पुनर्कल्पना
- एनईपी 2020, भाग द्वितीय उच्च शिक्षा, एक नए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन के माध्यम से सभी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक अनुसंधान को उत्प्रेरित करना
- एनईपी 2020, भाग द्वितीय उच्च शिक्षा, उच्च शिक्षा की नियामक प्रणाली को बदलना
- एनईपी 2020, भाग द्वितीयउच्च शिक्षा, उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए प्रभावी शासन और नेतृत्व
- एनईपी 2020, भाग तृतीयफोकस के अन्य प्रमुख क्षेत्र
- एनईपी 2020, भाग तृतीय प्रौढ़ शिक्षा और आजीवन शिक्षा
- एनईपी 2020, भाग तृतीयभारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति को बढ़ावा देना
- एनईपी 2020, भाग तृतीयप्रौद्योगिकी उपयोग और एकीकरण
- एनईपी 2020, भाग तृतीय ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षाः प्रौद्योगिकी का समान उपयोग सुनिश्चित करना
- एनईपी 2020, भाग तृतीय, इसे संभव बनाना

NatNationalEducationPolicy2020ional

• NEP2020 ,PartI. SCHOOL EDUCATION

• NEP2020, PartI. Curriculum and Pedagogy in Schools: Learning Should be Holistic, Integrated, Enjoyable, and Engaging

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

- NEP2020 ,PartI. Teachers
- NEP2020 ,PartI, Equitable and InclusiveEducation: Learning for All
- NEP2020 ,PartI, Efficient Resourcing and Effective Governance through School Complexes/Clusters
- NEP2020 ,PartI, Standard-setting and Accreditation for School Education
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Institutional Restructuring and Consolidation
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Towardsa More Holistic and Multidisciplinary Education
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Optimal LearningEnvironments and Support for Students
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Motivated, Energized, and Capable Faculty
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Equityand Inclusion in Higher Education
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Teacher Education
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Reimagining Vocational Education
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Catalysing Quality Academic Research in All Fields through a new National Research Foundation
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Transforming the Regulatory System of Higher Education
- NEP2020 , PartII, HIGHER EDUCATION, Effective Governance and Leadership for Higher Education Institutions
- NEP2020, PartIII, OTHER KEY AREAS OF FOCUS
- NEP2020, PartIII, Adult Education and Lifelong Learning
- NEP2020, PartIII, PromotionofIndianLanguages, Arts, and Culture
- NEP2020, PartIII, Technology Use and Integration
- NEP2020, PartIII, Online and Digital Education: Ensuring Equitable Use of Technology
- NEP2020, PartIV, MAKING IT HAPPEN

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in